शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बुद्धत्व की व्याख्या

प्राप्तिः 08.08.2022
स्वीकृतः 16.09.2022

64

डा० साहब सिंह
(ए०आर०डी)
मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
हैदराबाद
ईमेलः *sahabsinghalam@gmail.com*

सारांश

बुद्ध ने सनातन धर्म से जो विरासत पाई थी, उसका उपयोग उन्होंने सनातन ध र्म को परिष्कृत करने के लिए किया। वे निर्माण में विश्वास रखते थे। उन्होने भारत भूमि पर अपने निशान छोड़े, धर्म के सत्स्वरूप को भारत के बाहर फैलाया।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में, भारत में महावीर तथा बुद्ध का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान की विरासत को आगे बढ़ाया एवं उस ज्ञान को परिष्कृत रूप देने का प्रयास किया।

भागवान बुद्ध की बात करें, तो बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था, वे एक छोटे से राज्य कपिलवस्तु के राजा के पुत्र थे, जिनका पालन–पोषण ऐश्वर्य व विलास के वातावरण में हुआ। बड़े होने पर राजकुमारी यशोधरा से उनका विवाह हुआ एवं समय पर राहुल नाम के पुत्र के पिता बने। उनका जीवन ऐश्वर्य और विलासिता से भरा था। राजप्रसाद के सुखद परिवेश में रहते हुए वे जीवन के भोगों में लिप्त रहे। प्रसिद्ध उपाख्यानों से ज्ञात होता है कि उनके जीवन में चार ऐसी घटनाएँ घटी, जिन्होंने उनके जीवन को पूर्ण रूप से बदल दिया।

एक अवसर पर उनकी भेंट एक वृद्ध पुरुष से हुई, जिसे देखकर उन्हें महसूस हुआ कि एक दिन वे भी इसी अवस्था को प्राप्त होंगे। दूसरे अवसर पर उनकी मुलाकात एक बीमार व्यक्ति से हुई, तीसरे अवसर पर उन्हें एक शव दिखाई दिया, जिसे शमशान ले जाया जा रहा था, एवं चौथे अवसर पर उनकी भेंट एक सन्यासी से हुई। इन चारों दृश्यों ने उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया एवं वे गृहस्थ जीवन त्याग कर सन्यासी बन कर ज्ञान की खोज में भटकते रहे। अन्त में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई। एक ऐसे ज्ञान का प्रकाश मिला कि उन्होंने दुख मय जगत से परे एक अमर परलोक का मार्ग निर्दिष्ट किया। ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद उन्होंने स्वयं को 'तथागत' कह कर सम्बोधित किया। 'तथागत' का अर्थ है– वह व्यक्ति जो सत्य तक पहुँच गया है। उसके बाद वे जगह–जगह अपने ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करते रहे।

कुशीनगर में अन्तिम समय में अपने प्रिय शिष्य आनन्द से उन्होंने कहा था– ''सारी वस्तुएँ नाशवान हैं, अपने मोक्ष के लिए निष्ठापूर्वक प्रयत्न करो।'' भगवान बुद्ध का बौद्ध धर्म कोई नया धर्म नही, बल्कि भारतीय धर्म दर्शन का ही एक रूप था। बुद्ध ने ऐसा नही सोचा था कि वे कोई नया

धर्म चलाने जा रहे हैं। वे हिन्दू पैदा हुए, हिन्दू ही मरे। उन्होंने भारतीय आर्य सभ्यता के प्राचीन आदर्शो का ही पुनराख्यान किया।

'भिक्षुओ, इस प्रकार से भी मैने एक प्राचीन ढंग, एक प्राचीन पथ को ही देखा है जिसका अनुसरण प्राचीन काल के पूर्णतः ज्ञानवान, जाग्रत लोगों ने किया था। .... उसी पथ से मैं भी चला हूँ और इस पर चलते हुए मैने जिन बातों को पूरी तरह जान लिया है, उनको मैंने भिक्षुओं, भिक्षुणियों, साधारण स्त्री पुरुष, अनुयायियों एवं साधुओं तक को बतलाया है। (संयुत निकाय)

भारत के धर्म हमेशा से निर्वाण की खोज करते रहे हैं। मनुष्य हमेशा पार्थिव वस्तुओं से ऊपर उठे–यही सभी धर्मो का लक्ष्य रहा है। बुद्ध का भी लक्ष्य ज्ञान के माध्यम से एक नवीन आत्मिक सता की प्राप्ति रहा है।

''मैं मनुष्य का उच्चतम ध्येय उस पइ की प्राप्ति मानता हूँ, जिसमें न वार्द्धक्य है न भय न रोग न शोक, न जन्म, न मृत्यु, न चिन्ताएँ न जिसमें कर्म की पुनः पुन यात्रा करनी पड़ती है।''

पदे तु यस्मिन् न जरा न भीर् न कजः
न जन्म नैव परमो न चाधयः।
तम् एवं मन्ये पुरुषार्थम् उत्तमं न्
विद्यते यत्र पुनः पुनः क्रिया।''

अश्वघोष, बुद्धचरित IX 59

जो ज्ञान की आभा से अभिमंडित है, वह स्वतंत्र है, क्योंकि उसने सारे बन्धनों को तोड़ डाला है। सच्चा सन्यासी वही है जिसने अपने आप पर काबू पा लिया है, जिसका हृदय उसके अधिकार में है न कि वह स्वयं हृदय के अधिकार में'।

(मज्झिम निकाय XXXII)

निर्वाण प्राप्त करने के बाद अनस्तित्व में विलय होने से बहुत दूर हो गए। विलुप्त वह नही होते, वरन् उनकी इच्छाएँ और तृष्णाएँ होती हैं।

बुद्ध ने हमें प्रज्ञा का अनुगमन और करुणा का अथ्यास करना सिखाया। हमारे त्यागपूर्ण कार्य एवं हमारा बन्धुत्वमय दृष्टिकोण ही हमारी अच्छाई का प्रतीक होता है। असहाय, निर्बल, रोगी, वृद्ध आदि की पीड़ा की कसक को महसूस करने वाला ही पीड़ितजनों का सच्चा बन्धु होता है।

बौद्ध धर्म का आरम्भ एक नवीन धर्म के रुप में नही हुआ। भारत का धर्म उससे भी प्राचीन था, वह उसी की एक शाखा था। अध्यात्म विधा और नीतिशास्त्र की मूलभूत बातों पर तो बुद्ध अपने पैतृक धर्म (हिन्दु धर्म) से सहमत थे परन्तु उन्होंने उस काल में प्रचलित कुछ आचारों का विरोध किया। उन्होंने वैदिक कर्मकाण्डो को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने पशुबलि का विरोध किया। जब बुद्ध से वैदिक कर्मकाण्डों का पालन करने को कहा गया तो उन्होंने कहा– जहाँ तक तुम्हारे इस कथन का प्रश्न है कि मुझे अपने परिवार में प्रचलित यज्ञादि कर्मों को धर्म के नाम पर करना चाहिए, क्योंकि उनके विषय में प्रसिद्ध है कि वे मनोवांछित फल देने वाले हैं, पर मेरा पक्ष यह है कि मैं पशुबलि आदि यज्ञादि कर्मो को उचित नहीं मानता, कारण कि मैं उस सुख की परवाह नहीं करता जो दूसरों को दुख पहुँचा कर मिलता है।'' (बुद्ध चरित X164)

बुद्ध का मुख्य उद्देश्य था हिन्दू धर्म के कुछ आचार–नियमों को सुधारना। और अपने धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों की ओर लौट जाना। जो लोग सनातन धर्म के अनिवार्य ढाँचे को स्वीकार करते

हैं, उसका पालन करते है एवं जागृत चेतना की पुकार के अनुरूप उसे बल देना चाहते है, उन्हें अवतार के सतान ही माना जाता है। सनातन धर्म में ब्रह्म, विष्णु के रूप में नाना प्रकार के स्वरूप धारण करते रहे हैं। बुद्ध को भी अवतार रूप में स्वीकार किया गया, क्योंकि उन्होंने सनातन धर्म के कर्मकाण्डों से बचाया, एवं बुराइयों से निकाल कर धर्म को पवित्र कर एक नया रुप दिया।

बुद्ध एक नए प्रकार के मुक्त मानव के विकास का उद्देश्य लेकर चले। वह चाहते थे कि मानव अपनी आत्मा को अपना दीपक बनाकर अपने भविष्य का स्वयं निमार्ण करने के लिए संकल्पित हो। उनका मानववाद जातीय और राष्ट्रीय अवरोधों से ऊपर था, परन्तु उनकी यह सोच पूर्ण नही हो पाई, क्योंकि हमारे अन्दर का अहंकार, हमारे सत्य व ज्ञान पर कभी–कभी हावी हो जाता है।

विश्व में शक्ति, बन्धुत्व एवं मानवता को कायम करने के लिए हमें आन्तरिक एकता एवं आत्मिक शान्ति को बनाए रखना होगा। सच्चा बुद्धत्व पाने के लिए हम सभी को धर्म, वर्ण, जातिगत, भेदभावों, सांसारिक लोभ एवं माया–मोह से ऊपर उठकर अनासक्त भाव से कर्त्तव्य पथ पर बढ़ना होगा एवं मानव की पीड़ा को आत्मसात् करते हुए अपने अन्दर के बुद्धत्व को खोजना होगा।